GJMS

VOLUME-5

VOLUME 5, ISSUE 3, DECEMBER 2020

MAILING ADDRESS
30, Shobhit Complex, Nagar Nigam Raod Jabalpur MP
PRINCIPAL CONTACT

Mr. Anil Mehra
Publisher & Editor in Chief
Phone: 0761-4048109 Mobile:-09479399106
Email: editorgjms@gmail.com

ABOUT GJMS

ISSN No: - 2348-0459

The Multidisciplinary journal published under the aegis of GJMS is scholarly online international journals that publish research articles, book reviews, commentaries, correspondence, review articles, technical notes, short communications, case study, books, thesis and dissertation relevant to the fields of Agricultural Science, Ayurveda, Biochemistry, Biotechnology, Botany, Chemistry, Commerce, Computer Science, Economics, Engineering, Environmental Sciences, Food Science, Geology, Geography, History, Horticulture, Library & Information Science, Linguistics, Literature, Management Studies, Mathematics, Medical Sciences, Microbiology, Molecular Biology, Nursing, Pharmacy, Physics, Social Science, Zoology. The aim of this multidisciplinary journal is to foster research and disseminate cross disciplinary knowledge with an objective to bring academicians and practitioners at a common platform. GJMS invites authors to submit their original and unpublished work that communicates current research in the concerned areas based on theoretical and methodological aspects in the real world. All research papers submitted to the journal will be double – blind peer reviewed referred by members of the editorial board.

Indexed by

BASE
Bielefeld Academic Search Engine

DRJI

Google Scholar

Call for Papers

(January, 2021)

All researchers are invited to submit their original papers for peer review and publications. Before submitting papers to GJMS, authors must ensure that their works have never published anywhere and be agreed on originality and authenticity of their work by filling in the copyright form. Written manuscript in GJMS Format should be submitted via online submission at www.gjms.co.in

TABLE OF CONTENTS

1.	Commercial and Economic Linkages between Central Asia and India: Perspective From Kazakhstan **Dr. Shrikant Shrivastava**	
2.	The Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Schemes (MGNREGA) And Its Impact On Indian Rural Economy **Dr. Arjun Singh Baghel**	
3.	National Rural Employment Guarantee Act : Issues And Challenges **Dr. Jyoti Singh**	
4.	The Subaltern Voice in the Early Romantic Poetry **Dr.Anita Jhariya**	
5.	Dalit Perspective : The Erstwhile and New Forms of Exclusion and Discrimination **Dr.T.P. Mishra**	
6.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में व्यक्त सांप्रदायिकता **डॉ. नवीन टेकाम**	
7.	राहीमासूमरजा के उपन्यास त्रयी में साम्प्रदायिक समस्या का चित्रण (ओस की बूंद, कटराबी आरजू व असन्तोष के दिन उपन्यास के संदर्भ में) **डॉ. एस. पी. धूमकेती**	
8.	Accumulated Soil Enzymes in a Soil Profile Under Different Agro Ecosystems **Dr. B.L. Jharia**	
9.	Studies on the Impact of Heavy Metal Mercury on Biochemical Changes in the Adult Insect (Sphaerodemarusticum) (Heteroptera: Belostomatidae) In Relation to Excretionalatora **Dr. Seema Dhurvey**	
10.	Electrochemical Study of Propoxur **Dr. Rajesh Chaurasia**	
11.	आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य रक्षा का भौगोलिक अध्ययन (मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में) **रंजीता कमलेश**	
12.	आचार्य कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र' में वर्णित गुप्तचर व्यवस्था **डॉ. पी. एल. झारिया**	
13.	CREDIBILITY AMONG NGOs **Rajendra Sonwana**	
14.	मोहना की धार्मिक स्थिति : मंदिर मूर्ति एवं पर्वोत्सव **डॉ. एम.के.नागेश**	
15.	भारत की सामाजिक अवसंरचना की दशा एवं दिशा,(वैश्विक विकास के संदर्भ में) **श्रीमति नसीम बानो**	
16.	Globalization, Agricultural Sector And Decentralized Development In India **J.P. Shivwanshi**	
17.	मल्हार राज्य की मूर्तिकला – एक ऐतिहासिक विश्लेषण **डॉ. वंदना उरकुड़े**	
18.	Recent Techniques of Remote Sensing for Data Acquisition on Environment **Dr. Bhuvneshwar Temre**	
19.	Environment and Malnutrition in Tribal Children of Betul-Chhindwara Plateau (M.P.)	

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 5, Issue 3, December 2020
Available online at www.gjms.edwin.co.in

राहीमासूमरजा के उपन्यास त्रयी मेंसाम्प्रदायिकसमस्या का चित्रण (ओस की बूंद, कटराबीआरजू व असन्तोष के दिनउपन्यास के संदर्भ में)

डॉ. एस. पी. धूमकेती
हिन्दीविभाग
रानीदुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तरमहाविद्यालय, मण्डला (म.प्र)

भारतीय परिप्रेक्ष्य मेंअगरहमसाम्प्रदायिकता की बातकरेंतो इसे मूल रूपमेंहिंदू–मुस्लिमसमस्या के रूपमेंजानाजाताहै। ऐसानहींहैकिदूसरेपंथोंमें ऐसीटकराहटनहींहोतीहै, परतात्पर्य यह हैकि उस पैमानेपरनहींजितनीइनदोनोंसमुदायों के बीचमेंहोतीहै।प्रगतिशीलविचारधारा के अनुसारफोर्टविलियमकॉलेजमेंभारतीय साम्प्रदायिकता के बीज रखेगए।हिन्दी–उर्दूविवाद के रूपमेंउत्पन्नहुए इस पौधे का फलभारतीय समाजकोबँटवारे के रूपमेंचुकानापड़ा।राहीमासूमरजा इस विवाद की जड़ की ओरइशाराकरतेहुए एक जगहकहतेहैं, ''पाकिस्तान की बुनियादसचपूछिए तोउन्नीसवींसदी के आरम्भमेंपड़ गईथी, कलकत्ते के फोर्टविलियमकॉलेजमेंगिलक्राइस्टनामकअंग्रेज ने पाकिस्तान की बुनियादडालीथी।अंग्रेजों की यह योजना धीरे–धीरे शैक्षिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र मेंप्रवेशकरतीगई।सन 1857 के दौरानजबदोनोंसमुदायों ने मिलकरअंग्रेजसत्ताकोसीधेतौरपरचुनौतीदीतोअंग्रेजों ने यह समझलियाकिइनदोनोंसमुदायोंकोआपसमेंलड़ाकरही यहाँ राज कियाजासकताहैऔर इस तरह इस समस्या ने अपनाआकारलेना शुरू किया।

भारतीय समाजमेंउत्पन्नहुई इस समस्या की पड़तालकरतेहुए सन् 1931 मेंहुए कानपुरदंगों की जाँचरिपोर्टमेंआए तथ्य इसकीपुष्टिकरतेहैं।रिपोर्ट के अनुसार, ''भारत के साथहिन्दुत्व के अधिकप्राचीनसंबंध और इस देश के हिंदुत्व के साथ बंधेरहने के कारणहिन्दुओंमेंइसनेउनकी क्षेत्रीय भावना के साथगठबंधनकरलिया। ......लेकिनदोनोंसमुदायोंमें इस सब का विकासब्रिटिश शासन द्वारापुरानेसामाजिकसंतुलनोंतथाआदर्शोंकोबिगाड़नेऔरभारतीय जीवन मेंपश्चिमीविचारों एवंशिक्षा के फैलाव के जरिए भारतीय राष्ट्रीय आदर्श के स्थानपरस्वाभाविक रूप से हुआ। इस तरह यह स्पष्टहोताहैकिभारतीय समाजमें यह समस्याअंग्रेजों की देनहै। धीरे–धीरे यह समस्या 'द्विराष्ट्र सिद्धांत', 'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान' से होतेहुए 'उर्दू, मुस्लिम, पाकिस्तान' तकपहुँची।

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459
Volume 5, Issue 3, December 2020
Available online at www.gjms.edwin.co.in

आजादी से पूर्व शुरू हुईभारतीय समाजमेंविभाजन की यह प्रक्रियाआजादी के बादभीनिरन्तर रूप से जारीहै।आजादभारतमेंहुए साम्प्रदायिकदंगेऔरविस्थापनइसकेप्रमाण के रूपमें देखेजासकतेहैं, विशेषकरअस्सी के दशकमेंहुए मराठीबनामगैरमराठीदंगे, सिक्ख विरोधीदंगे, रामरथ यात्रा के दौरानभड़केदंगे, भागलपुरदंगे, कश्मीरीपंडितों का विस्थापन, बाबरीविध्वंस व उसकेबाददेशभरमेंभड़केदंगे, गोधराकांड व उसकेबादभड़केदंगे व मुजफ्फरनगरदंगेआदिप्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। ये घटनाएँ भारतीय समाजमें एक राष्ट्रीय शर्म के तौरपरजानीजातीहैं।

हिन्दीकथासाहित्य मेंसाम्प्रदायिकता के प्रतिविरोध का स्वरमुखररहाहै। समय–समय परहिन्दी के लेखक इस समस्या के विविध पक्षोंपरअपनेविचार रखतेहुए भारतीय जनताकोसद्भाव का पाठपढ़ातेरहेहैं।अगरहमब्रिटिशभारत के दौर की बातकरेंतोप्रेमचन्द, जैनेन्द्र व जयशंकरप्रसादआदि के कथासाहित्य मेंसाम्प्रदायिकसद्भाव के प्रतिआह्वान यत्र–तत्र बिखरापड़ाहै।जैसे–जैसेआजादीनिकटआतीगईहिन्दीजगत् के साहित्यकारों की संवेदना इस समस्या की ओर बढ़ती गई। यह दौरभारतीय इतिहासमेंसाम्प्रदायिकता का चरमदौरथा।बँटवारे के साथमिली खंडितआजादी ने पूरेदेश की एकताको बिखेरकर रख दिया। इस बिखरीहुईएकताकोसाहित्यकारों ने पुनः एक करने का भरपूरप्रयासकियाजिनमेंकमलेश्वर, भीष्मसाहनी, यशपाल, कृष्णा सोबती, मुक्तिबोध, रेणुऔरराहीमासूमरजाजैसेसाहित्यकारों ने प्रमुख भूमिकानिभाईहै।

कबीरऔरप्रेमचंद के सच्चेउत्तराधिकारीराहीमासूमरजा का पूरालेखनसाम्प्रदायिकता के विरुद्ध एक सतत् संघर्षहै।राही के लिए साम्प्रदायिकसद्भावसर्वाधिकमहत्त्वपूर्णरहाहै।कईविद्वानों का माननाहैकिराही के अन्दर ये विचार उनके समय की देनथी। यह गौरकरने की बातहैकिराही की युवावस्था के दौरानदेश का विभाजनहुआथा। इस घटना से पूर्वऔरपश्चात् कट्टरसाम्प्रदायिकता के तांडव ने युवाहृदय परगहराअसरडाला। यहीकारणरहाहैकिउनकीहररचनाचाहेकिसीभीमुद्देकोलेकर शुरू हुईहो, आगे–पीछे घूमकरसाम्प्रदायिकसमस्याकी ओर बढ़ हीजातीहै।इसीकड़ीको 'ओस की बूंद', 'कटराबीआरजू व 'असंतोष के दिन' उपन्यासआगे बढ़ातेहैं।इनतीनोंउपन्यासोंमेंलेखक ने आठ–आठवर्षों का अन्तर रखा है। यह अन्तरालदेशमें बढ़ती कट्टरताकतों के सोपानोंकोबड़ीसूक्ष्मता से चित्रित करताहै। 'ओस की बूंद' के वजीरहसन, वहशतअंसारी व शहला, 'कटराबीआरजू' की राजनीतिकपरिस्थितियाँ व 'असंतोष के दिन के अब्बासमूसवी, धर्माधिकारी, बर्कसाहब व जरीकलम का सहारालेकरराही ने साम्प्रदायिकताकतोंपरव्यापकप्रहारकियेहैं।

राही का उपन्यास 'ओस की बूंद' सन् 1970 मेंप्रकाशितहुआ। यह रचना एक तबके के मादरेवतन से लगाव के विभिन्नपहलुओंकोउजागरकरतीहै।आजादी के बादमुस्लिमवर्ग उपेक्षा का

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 5, Issue 3, December 2020
Available online at www.gjms.edwin.co.in

शिकाररहाहै।इसकेपीछे यह तर्कसामनेआयाहैकिविभाजन के लिए चूंकि यहीवर्गजिम्मेदारहै, इस कारण इस देशमेंमुसलमानोंकोअपनाहकमॉंगने का कोईअधिकारनहींहै। इस वर्गको या तोबहुसंख्यक वर्ग से दबकररहनाहोगा या फिरपाकिस्तानजानाहोगा।जिसकापरिणाम यह हुआकिदंगों व मानवाधिकार के उत्पीड़न से यह वर्गसामाजिकन्याय से दूररहगयाहै।कुछ ऐसीही घटनापाकिस्तानऔरबांग्लादेश के हिन्दुओं के साथहुई।वहाँ का बहुसंख्यक मुस्लिमवर्ग का एक हिस्साउन्हेंअपनेदेश का नागरिकहीनहींमानताहै। ऐसेकट्टरपंथियोंकोआईनादिखातेहुए तसलीमानसरीनलिखतीहैं, "बांग्लादेश के हिन्दू बाढ़ के पानीमेंबहकरनहींआए हैं।वे इस देश के नागरिकहैं।कुछ ऐसेहीचित्रों की झाँकीराही के उपन्यास 'ओस की बूंद' मेंमिलतीहै।

उपन्यास का प्रमुख पात्र वजीरहसनआजादी से पूर्वमुस्लिमलीग का सदस्य थाऔरपाकिस्तानबनवाने की कोशिशमेंलगाहुआथाजबकिउसकाबेटापाकिस्तानबनवाने के खिलाफथा।बँटवारे के पश्चात् इसकेउलटबेटापाकिस्तानचलाजाताहैऔरवहहिन्दुस्तानमेंरहने का फैसलाकरताहै, क्योंकिवहमानताहैकिहिन्दुस्तानउसका घरहैऔरवहअपना घरक्योंछोड़े।

अपने घर के प्रतिवजीरहसन के लगाव व इतिहास से परिचय करातेहुए लेखकबताताहै ''वजीरहसन का घरलगभगचारहजारबरसपुरानाहै।आप इस परआश्चर्य न करें। घरदीवारों का नाम नहींबल्कि एक कल्पना का नाम है।वजीरहसन के पुरखोंमें से किसी ने पिछली शताब्दियों की धुंध मेंइस्लामस्वीकारकियाथा।परन्तुइस्लामस्वीकारकरने से पहलेभीतो घररहाहोगा। इस उदाहरण द्वाराराहीको उस विचारधारापरचोटकरतेहुए देख सकतेहैंजो यह मानतीहैकिमुसलमानों का भारतमेंकोईहकनहींहैऔर इस वर्गकोहमेशाविदेशीकरारदेकरउसेउसकीजड़ों से हटाकर या तोभारत से बेदखलकरनाचाहतीहै या फिर द्वितीय श्रेणी का नागरिकबनारहने की शर्तपरभारतमेंरहने की इजाजतदेती

आजादी के बादबदलेहालातजबअल्पसंख्यकोंकोदबकररहनेहेतुमजबूरकरनेलगेऔर उनके नायकोंको योजनाबद्ध तरीके से खलनायकबनाने का दौर शुरू हुआतो यह वर्गसहमगया।प्रबलतरीके से विरोध करनाभीमुश्किलहोगया, क्योंकिअबकोई इस वर्ग की आवाजउठानेवालानहींरहा।कुछ ऐसीहीस्थितिस्कूल का नाम बदलने एवंहिन्दी के अध्यापक के वेतन बढ़ाने के दौरानहुई।वजीरहसन का विरोध इस कारणथाकिदूसरे योग्य शिक्षकों का वेतनक्योंनहीं बढ़ायाजारहा।वहसवालपूछताहैकिक्यागोवरधन (हिन्दी शिक्षक) कोकेवलहिन्दूहोने के कारणफायदा मिल रहाहै? परस्कूल की वर्किंगकमेटी का डर कम नहींहोताहैऔरगोवरधन की तनख्वा बढ़ा दीजातीहै।

साम्प्रदायिकता के आधारपरदेशविभाजन की माँगपरउत्तरभारतमेंमुसलमानों के एक वर्ग ने पक्ष मेंवोटदेकरगलतीकी। इस गलतीकोदेश का हरचिंतनशीलमुस्लिमवर्ग का पश्चातापवजीरहसन की रागात्मकपीड़ा द्वारा समय–समय

परकईबारसामनेप्रकटहोताहै।जबउसकाबेटाउसेपाकिस्तानचलने की बातकरताहै, तबवहकहताहै, "मैं एक गुनहगारआदमीहूँ औरउसीसरजमीनपरमरनाचाहताहूँ, जिसपरमैंनेगुनाहकियेहैं।वजीरहसन का यह वाक्य उसकेप्रायश्चितकोदिखाताहै, पर यह पश्चातापभीउनकोदेश की मुख्य धारा से जोड़नेमेंअसफलरहा।विभाजन का दागमुसलमानों की राष्ट्रभक्तिपरचाँद के दाग के समानअमिट रूप से लगचुकाहै। यहीकारणरहाकिउसेहरकदमपरअपनीराष्ट्रभक्तिसाबितकरनीपड़तीहै। यह औरबातहैकिदेश का एक बहुतबड़ावर्ग इसे नाटकहीमानताहै।

उपन्यास की कहानीमेंतबरोचकमोड़ आताहै, जबवजीरहसन की पुरानीहवेलीमेंमौजूदमंदिरजो उनके पूर्वजों का है, साम्प्रदायिकतनाव की जड़ बन जाताहै। इस मंदिर की पूजासैकड़ोंवर्षों से उसी का परिवारकरताआरहाहै।मगरवोटों का ध्रुवीकरण करने के लिए जनसंघ इस मंदिरकोहिन्दुओंकोदेने की बातकरताहैऔरमुस्लिमवर्ग इस मंदिरको बंद करवाने की, परवजीरहसनदोनों की बातअस्वीकारकरतेहुए अपनेपरिवार द्वाराहीपूजा का पुरानाविधानजारी रखनाचाहताहै।इसीजददोजहदमेंवहपी.ए.सी. की गोली का शिकारहोजाताहै।लेखक ने इस मौतकोभारतीय साझा संस्कृति की मौत के रूपमेंचित्रित कियाहै।मुस्लिमवर्ग का डरवजीरहसन की मौत के बादभी खत्मनहींहोताहै।अपनेदादावजीरहसन की हत्या का मुकदमालेकरजब शहलावकीलवहशतअंसारी के पासलेजातीहैतोवहडर के मारेमुकदमालेने से मना करदेताहैऔरउसेकिसीहिन्दूवकीलकोमुकदमासौंपने की बातकहताहै।इससेअनुमानलगायाजासकताहैकिआजादभारत का अल्पसंख्यक वर्गसाम्प्रदायिकताकतों से कितनाडराहुआहै।

किसीभीसभ्य समाजमेंसामाजिकसमरसताउसकीआत्माहोतीहै, परकुछदशकों से समाजमेंसमरसता की भावनामेंलगातारकमीआरहीहै, इसकेकारणकोराहीस्पष्टकरतेहुए कहतेहैंकिपुरानीपीढ़ी कोअपनेबुजुर्गों से कुछरवायतेंमिलीथीं, मगरनईपीढ़ी कोकुछसियासीनारों के अलावाकुछनहींमिला।पुरानीरवायतेंजहाँ अपनाफर्जनिभातेहुए आपसीसद्भावपरजोरदेतीथीं, वहींसियासीनारेअपनेहक के लिए मरमिटने के अलावाकुछनहींहैं।इनअधिकारों की भीड़ में खोईकर्तव्यों की आवाजइतनीकमजोरहोचुकीहैकिलेखक कह उठताहै

"गुलशनमेंकहींबूए–दम साजनहींआती

अल्लाहरेसन्नाटा, आवाजनहींआती।"

यह शेरजहाँ मानवीय मूल्यों की वीरानीकोदर्शाताहै, वहींनईपीढ़ी मेंसामाजिकसमरसता के अभावकोभीचित्रित करताहै।साथही यह सवालउठाताहैकिक्यावर्तमानपीढ़ी इतिहास के चौके से बिनाकुछग्रहणकियेभूखीहीउठजाएगी? कहनागलत न होगाकि यह एक ऐसाज्वलंतसवालहैजोआनेवालेसमाज की रूपरेखा का चित्र खींचताहै।

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 5, Issue 3, December 2020
Available online at www.gjms.edwin.co.in

साम्प्रदायिकता के उत्थान के मुख्य कारणोंमें एक कारणहमारे स्वतंत्रतासंग्राम के दौरानप्रतीकों के चयनमेंगलतीभीहै। एक सम्प्रदाय के प्रतीकों की भरमार के नीचेदूसरेसम्प्रदाय के प्रतीक एवंआदर्शदब गए जिसकेकारणसद्भावमेंजहर घुलतागया। यह स्थिति धर्मोंमेंभीरही।प्रतीकों के प्रति इस हदतकजनताअंधीहोजातीहैकि धर्म की मूलभावनाजोमानवतावादहै, गौण बन जातीहै।उपन्यास का पात्र वहशतअंसारीइसी द्वन्द्व मेंफँसाविचारकररहाहैकि, "क्योंकि धर्मअब नाम रहगयाहै, केवल यह जताने का किहम धर्मकोमानतेहैं, मस्जिदोंमेंसमाजकोसिज्दाकियाजाताहै।मंदिरोंमेंसमाज की पूजाहोतीहै. .....। गाय माताहोने के बादभी कृष्ण नहींहै। कृष्ण तोमनुष्य हीहैय .....। गाय औरआदमी।कौनबड़ाहै? तोआखिरजबबलवेहोतेहैंतोपुरी के शंकराचार्यबोलते. क्योंनहींहैंकिमनुष्य कोकाटना बंद करो।'' वहशत का द्वन्द्व धर्म का वास्तविकपहलू खोजरहाहै, परकहनागलत न होगाकिइन्हींप्रतीकों ने भारतको डेढ़ सौवर्षों से दंगों की आगमेंझोंक रखा है।मंदिर–मस्जिद के आगेढोलबजाना, लाउडस्पीकरबजाना, मोहर्रमऔरहोली के त्यौहारों के लिए मार्गपरिवर्तन एवंगौहत्याजैसेमुद्दोंकोलेकरअक्सरसांप्रदायिकतनावफैलजाताहै।

सन् 1921 मेंजबगौहत्या के नाम परदंगेहोरहेथेतबमहात्मागाँधी ने इस विषय परअपनेविचारप्रकटकरतेहुए कहाथा, ''मैं एक गाय की जानबचाने के लिए किसीआदमी की जाननहींलूंगा, ठीकउसीतरहजिसतरहकिमैं एक आदमी की जानबचाने के लिए किसीगाय की जाननहींलूँगा।'' महात्मागाँधी के यह विचारजोसहअस्तित्व की धारणा से जुड़ेहैं, राही के विचारोंमेंभी देखेजासकतेहैं।

राही के लिए गंगा–जमुनीतहजीबसबसेअधिकमहत्त्वपूर्णरहीहै, इसे बचाने के लिए वेकोईमौकानहींछोड़तेहैं।प्रस्तुतउपन्यासमेंवजीरहसन के घरमेंमौजूदमंदिरउसकीमृत्यु के पश्चात् उसकीवसीयत के अनुसार शहला के मालिकानेहकमेंजाताहै।मौका देखकरमुस्लिमवर्गफुसलाकरऔरहिन्दूवर्गडराकरअपनाहितसाधने की कोशिशकरतेहैं, परवहडरतीनहींहै।भरीअदालतमेंवहकहतीहै, "यहमेरीजातीहवेलीहै।..। इस हवेलीमेंजोमंदिरहै, वहकिसीभगवान का नहींहैबल्किमेरेबुजुर्गों का हैऔरवहइसलिए मौजूदहै।वहमंदिरहिन्दुओं के डर से मेरे घरमेंनहींजारहाहै, क्योंकिहिन्दुओं का डरतोअबपैदाहुआहै। यह इस डर से बहुतपहले की बातहै।मुझे नहींमालूम यह डररहेगा या खत्महोजाएगाय लेकिनमुझे यह मालूमहैकि यह मंदिररहेगा।''10 शहला का यह कथनसाम्प्रदायिकता के विरुद्ध राही के विचारों की छापहै, वहींडरपरमजबूतहौसलोंकोदिखाकरकट्टरताकतों के विरुद्ध जंग का ऐलानभीहै।

आपातकाल के राजनीतिक घटनाक्रम की पृष्ठभूमिपरराही ने ''कटराबीआरजू' नामकउपन्यासलिखा हैजोआपातकाल के दर्दनाकपहलुओंकोउद्घाटितकरने के साथ इस स्थिति का फायदाउठाकरसाम्प्रदायिकताकतों द्वाराकिये गए राजनीतिमें धर्म के घालमेलकोचित्रित

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 5, Issue 3, December 2020
Available online at www.gjms.edwin.co.in

करताहै।उपन्यास के पात्र देशराज, भोलापहलवान, शम्सूमियाँ औरमास्टरबदर के परिवारोंमेंमौजूदभावात्मक एकता इसे सामाजिकउपन्यास की श्रेणी में खड़ाकरतीहै।विभाजन का दर्द इस उपन्यासमेंभीदिखाईदेताहै। शम्सूमियाँ का जवानबेटाअब्दुलउन्हें व उसकेबीवी–बच्चोंकोछोड़करपाकिस्तानचलाजाताहै।मगरउस्ताद शम्सूमियाँ बिनाभेदभाव के अपनेदोस्त के पुत्र देशराजकोअपनेपुत्र के हिस्से का प्यारदेतेहुए उसेमैकेनिकका कामसिखातेहैं।अनाथदेशराजभीउन्हेंपितासमानआदरदेताहै।वहींदूसरीओरभोलापहलवान शम्सूमियाँ के पिताउस्तादअब्दुलकरीम खान के शिष्य रहेहैं।प्रत्येकनागपंचमी के दिनभोलापहलवानअपनेउस्ताद के बेटे शम्सूमियाँ कोपगड़ी बंधवातेहैं।साथहीउसकीदुकानमेंबजरंगबली की फोटों के साथगामापहलवान की तस्वीरभीलगीहुईहै।मोहल्ले के दोस्तलोगजबउसेछेड़तेहुए कहतेहैंकितुमने एक मुसलमान की तस्वीर यहाँ क्योंलगा रखीहैतोभोलापहलवानभड़कउठताहै, वहजवाबदेताहैकिजबइसीगामापहलवान ने मेरे शरीरपरपहलीबार अखाड़े की मिट्टीलगातेहुए मेरा धर्मनहीं देखा तोमैंक्यों देखें? कथा के ये दृश्य भारतीय समाजमेंविद्यमानसामाजिकसमरसता की प्रगाढ़ताकोदर्शातेहैं।

इसी से जुड़ा एक रोचकप्रसंगतबआताहैजबहोलीऔरजुम्मे का दिनसाथ–साथआतेहैं। शम्सूमियाँ औरमौलवी खैरातीहोली के रंग व हुड़दंगियों से बचतेहुए मस्जिदमेंजाने के प्रयास के दौरानहुड़दंगियोंमेंफंसजातेहैं, तब एक लड़का उन पररंगलगाने व नमाजकजाकरने के लिए दबावडालतेहुए कहताहै, ''मियाँ लोगों का जुम्मातो 15 अगस्त, 47 कोचलागयापाकिस्तान।होली से परहेजहैतोइहाँ रहे की जरूरत का है। इस परभोलापहलवानक्रोधितहोकर उस लड़के की पिटाईकरताहैऔरअपनेनमाजीदोस्तोंकोसुरक्षितमस्जिदतकपहुँचवाताहै।कहनाउचितहीहोगाकिआपस ीसद्भावहीहमारेभारतकोभारतबनाये रखेहुए है।

राही ने उस समय होरहीराजनीतिकहलचलकोबड़ीबारीकी से समझा, इसी समझ का परिणामहैकिदेश की राजनीतिमेंहोरहेकट्टरसाम्प्रदायिकता के मिश्रणको इस उपन्यास द्वारा समझानेमेंवेसफलरहेहैं। इस पहलू के विविध पहलुओंकोउद्घाटितकरने के लिए वेउपन्यास के ठीकबीचमेंपाठकों से इजाजतलेकरउतरतेहैंऔरअपनीबातप्रारंभकरतेहैं, 'मैंनेइमरजेंसी के जमानेमेंभीश्रीमतीगाँधी का विरोध करने की हिम्मत की थीऔरमैंश्रीजयप्रकाशनारायण के आंदोलन से भीसहमतनहींथा। ....।फिरजोलोग उनके साथलगलिए थेवहभीकुछभलेलोगनहींथे।.... ।बिहारमेंउन्हेंपहलेकभीबेईमानीनहींदिखाईदीऔरजब उस स्टेटको एक ईमानदारचीफमिनिस्टरमिलातोबिहार के बेईमानलोगोंकोसाथलेकर धावाबोलदियाऔरजनसंघ, आर.एस.एस., प्रेममार्गियोंऔरजमाअते–इस्लामीजैसे घोरआवाम–दुश्मनों से गठजोड़ करतेहुए उन्हेंजरातकल्लुफ न हुआ।मार्क्सवादीकम्युनिस्टों ने भी इस मोर्चे का साथदियाऔर यूँ जनसंघ ने दिल्लीमेंसरकारबना ली।12 इस तरह इस साम्प्रदायिकराजनीतिकगठजोड़

मेंजनतापार्टीतोजीतगई, मगरदेश एक बारफिरहारगया।उपन्यास के अंत मेंजनतापार्टी के नेताआशाराम के विजय जुलूस के नीचेआकरपागल एवंअपाहिजदेशराज की मौतइसीतरफइशाराकरतीहै।

दंगों की आगमेंजलतेस्वातंत्र्योत्तरभारत की यथार्थऔरदर्दनाकतस्वीरराही ने 'असंतोष के दिन' नामकउपन्यासमेंउकेरीहै। इस उपन्यास का मुख्य पात्र अब्बासमूसवी एक पत्रकारहैजिसेलगातारसत्ता, समाजऔरमीडिया से लड़ताहुआ देखा जासकताहै। इस दौरमें यह तीनोंवर्ग घोरसाम्प्रदायिकहोचुकेथे। यहाँ यह कहने की पुनः आवश्यकतानहींहैकि यह उसी घालमेल का परिणामहैजोसत्तर के दशक के अंतिमवर्षोंमेंहुआथा।उपन्यास की कथामेंकईमुद्दोंपरपाठकों का ध्यान खींचागयाहैजिनमेंनस्लवाद, भाषावाद, प्रेम–विवाह, छद्म धर्मनिरपेक्षता व क्षेत्रवादआदिप्रमुख हैं।इनमुद्दोंपरविवादपैदाकरकेसंकीर्णराजनेताओं ने देश के माहौलमेंसाम्प्रदायिकता का जहर घोला।उपन्यास की कथा के अनुसारमुंबईमें क्षेत्रवाद के नाम पर शुरू हुए मराठीबनामगैरमराठीदंगे शीघ्रहीमराठीबनाममुस्लिमविरोधीदंगोंमेंबदलजातेहैं।इसी घटनाक्रममेंजरींकलममीरअलीअहमदजोकथाकार के अनुसारमराठातुकाराममिर्जाकर के वंशजहैं, इनदंगोंमेंमारेजातेहैं। ऐसी घटनाओंपरव्यंग्य कसतेहुए मूसवीअपनेमित्र धर्माधिकारीजो एक मराठाभीहै, से पूछतेहैं

''कितनेमारे?'' उसनेपूछा।

मगर धर्माधिकारीहँसने की जगहरोपड़ा।

"यह सब क्याहोरहाहैमूसवीसाहब?''

''बलवाहोरहाहैभैया।"अब्बास ने कहा, ''तंदूलकर के घरवालेअमर शेख के घरवालोंकोमाररहेहैं। यार एक बातबताव, मराठीमुसलमानों की तरफशिवसेना का क्यारवैयाहै।हदहैकि 'इलस्ट्रेटेडवीकली' वालों ने भीश्रीबालठाकरे से यह सवालनहींकिया। 13 यह उदाहरणजहाँ क्षेत्रवाद के नाम परराजनीतिकरनेवालों के दोमुँहापनकोजाहिरकरताहै, वहींदूसरीओरसाम्प्रदायिकऔरपक्षपातीहोचुकेमीडियाकोभीआईनादिखाताहै।दंगों के समय मीडिया का एक वर्गअक्सरसाम्प्रदायिकरंगमेंरंगकरसत्य कोछुपाने का प्रयासकरताहै। इस संदर्भमेंसुधीशपचौरीकहतेहैं, ''माननीय जजरंगनाथमिश्राआयोग की रिपोर्टमेंइंदिरागाँधी की हत्या के बादउसकेअंतिमदर्शन के दौरानदूरदर्शन के सीधा प्रसारणमें 'खून का बदला खून' नारे के अचानकप्रचार का जिक्रआयाहै, जोस्वयंमाध्यम औरसमाज के एक नयेसंबंध की व्याख्या का एक अच्छाउदाहरणदेताहै।'' यह उदाहरणमीडिया के घोरसांप्रदायिकहोने का भावदिखाताहै।

राहीसाम्प्रदायिकता के हर रूपपरप्रहारकरने से नहींचूकते।जबबर्कसाहबकोमुस्लिमबलवाइयों ने चाकूमारदियातोअपनीपीड़ाकोमूसवीव्यंग्य

मेंढालतेहुए कहतेहैं, ''मगर एक फायदातोहुआबर्कसाहबकि 62 बरस जीने के बादआजआपको पता चलगयाकिआपहिन्दूहैंऔर यहीहालरहातोकिसीदिनमुझे भी पता चलजाएगाकिमैंमुसलमानहूँ। 15 ऐसेसम्प्रदायों के जंगल मेंजोव्यक्तिअपनेआपकोकेवलइंसान समझताहै, वहबिल्कुलअकेलाऔरअसुरक्षितहै ।इसलिए राही का माननारहाहैकिदुनियामेंअल्पसंख्यक केवलइंसानियत की बातकरनेवालेहीहैं, हिन्दू–मुसलमानतोबहुतहैं। यहीकारणरहाहैकिजब–जबकोईदंगों के बादसद्भावबनाने के लिए इकबाल का 'मजहबनहींसिखाताआपसमेंबैर रखना' वाला शेरसुनातातोवेभड़कउठतेहैंऔरकहतेहैंकिअरेभाई, इनलीकोंकोछोड़ो, यह न बताओ की आपसमेंबैर रखनाकौननहींसिखाता। यह बताओ की आपसमेंबैरकौनसिखा रहाहै ।किसकीबातमानें? गुरु नानक की या संत जरनैल सिंह भिण्डरावाले की? मुहम्मद की या बनातवाला की? श्री कृष्ण की या देवरस की? तुकाराम की या बालठाकरेकी। यह भड़ासकेवलराही की नहींबल्किहर उस आमनागरिक की हैजोदंगों की आगझेलताहै।

साम्प्रदायिकदंगों के समय अक्सर देखा गयाहैकिप्रशासन का एक वर्गसाम्प्रदायिकहोजाताहै ।भारतीय पुलिस की कार्यशैलीपर टिप्पणी करतेहुए विख्यातसाहित्यकारऔरपूर्वपुलिसअधिकारीविभूतिनारायण राय ने एक व्याख्यानमेंस्पष्टकियाहै, ''पुलिस शासकों की हिफाजत के लिए बनीहै ।दंगों के समय उनकीभूमिकाहिन्दूबलवाई की होतीहै। 16 पुलिस की इस भूमिका से राहीभीपरिचितथे ।वहअब्बासमूसवी द्वारा यहीबात धर्माधिकारी से विमर्श के दौरानकहलवातेहैं, ''अरेभैया, यूपीमेंभीपुलिसमुसलमानोंकोहीमारतीहै। यहाँ पुलिसमेंमराठाज्यादाहैं ।जोकर्नाटक–महाराष्ट्र की सीमापरहै, कर्नाटक के ब्राह्मणोंऔरमराठोंमेंलड़ाईहोगीतोवहकर्नाटक के ब्राह्मणोंकोभीमारेगी ।उत्तरप्रदेश की पी.ए.सी. मेंकान्यकुब्जब्राह्मणज्यादाहैंतोवहठाकुरों, हरिजनोंऔरमुसलमानोंकोमारतीहै ।पुलिसमेंभीहमीं–तुम्हींहोतेहैंना। ....। पुलिसमेंमुसलमानज्यादाहोंगेतोपुलिसहिन्दुओंकोमारेगी।''7 अब्बास का यह वाक्य जहाँ प्रशासन के गैरजिम्मेदार रूपकोदर्शाताहै, वहीं इस ओरभीइशाराकरताहैकिपुलिसकोमनुष्य बनानाक्योंआवश्यक है?

किसीभीराष्ट्र को धर्मनिरपेक्ष विचारधारा शांतिपूर्णसहअस्तित्व की पहचानदिलातीहै ।भारतहमेशा धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र रहाहै। यहीकारणहैकिमूलसंविधानमें यह शब्दसमाहित न करकेभीदेश के प्रथमपीढ़ी के नेताओं ने इस विचारधाराकोआगे बढ़ाने का प्रयासकिया। इस बारेमेंविपिनचन्द्रानेहरू के विचारों का परिचय करवातेहुए बतातेहैं, ''नेहरू धर्मनिरपेक्षता के बारेमेंसाफराय रखतेथे ।उन्हीं के शब्दोंमें, "धर्मनिरपेक्षता का मतलब यह नहींहैकिकिसी धर्मनिरपेक्ष राज्य में धर्मकोहतोत्साहितकियाजाएगा ।इसकाअर्थ यह हैकिसभी धर्मोंऔरविश्वासोंऔरकोई धर्मनहींमाननेवाले यानीनास्तिकोंकोभीपूरीआजादीमिलेगी।''18

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 5, Issue 3, December 2020
Available online at www.gjms.edwin.co.in

सरदारपटेल के विचारभीनेहरू के विचारों से अलगनहींहैं।विपिनचन्द्राबतातेहैं, ''सन् 1950 मेंउन्होंने एक सभामेंकहा, ''हम एक धर्मनिरपेक्ष राज्य हैंऔरअपनीनीतियोंऔरतौर–तरीकोंकोहमपाकिस्तान के तौर–तरीकोंपरआधारितनहींकरसकते।हमें देखनाचाहिए किहमारे धर्मनिरपेक्ष विचारऔरआदर्शव्यवहारमेंभीउतरें।''

परइनमहाननेताओं का स्वप्न धीरे–धीरे बिखरनेलगा। 42वें संविधानसंशोधनमें 'धर्मनिरपेक्षता शब्दप्रस्तावनामेंजोड़ देने के बादभीइसकादायरा कम होतागया। शायद धर्मनिरपेक्षता का दायरा धीरे–धीरे कम होरहाथाइसीलिए यह संशोधनआवश्यक हुआहोगा, परकट्टरताकतों के निशानेपर यह विचारधाराऔरसंशोधनदोनोंहमेशा से निशानेपररहेहैं।देशमें बिखरतेसामाजिकताने–बाने से राहीभलीभाँतिपरिचितथे।छद्म धर्मनिरपेक्षता की ओर ध्यानआकर्षितकरतेहुए वे इस उपन्यासमेंअब्बासमूसवीऔरविष्णुजी के परिवार का उदाहरणपेशकियाहै। ये परिवार धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के कट्टरसमर्थकहैं, दोनोंपरिवारअपनी–अपनीबेटियोंकोदूसरे धर्ममेंविवाहकरनेकोअनुचित समझतेहुए इस रिश्तेकोठुकरादेतेहैं, परहाँ, अपनेबेटों की शादीजरूरदूसरे धर्ममेंकरवानाचाहतेहैं।परिवारों के इस दोमुंहापनपरउपन्यास का नायकअब्बासमूसवीबड़ा दुःखीहोताहै। इस तरहराहीछद्म धर्मनिरपेक्षता के चेहरे से भीनकाबहटाते

साम्प्रदायिकदंगों के समय दंगों के समर्थकअपनीहिंसककार्रवाईकोसहीठहराने के लिए 'क्रिया की प्रतिक्रिया' वालेन्यूटन के सिद्धांत का हवालादेकरसहीठहरातेहैं। इस पर राहीमासूमरजाअपनीसंवेदनात्मकअनुभूतिसाझा करतेहुए लिखतेहैं, ''मैंहिन्दुस्तानऔरपाकिस्तान के हर शहर का बेटाहूँ।जो घरजलताहै, वहमेरा घरहै।जिसऔरत के साथजिनाकियाजाताहै, वहमेरीमाँ, मेरीबहनऔरमेरीबेटीहै।'' निश्चिततौरपर ऐसीक्रिया की प्रतिक्रिया' सामाजिकताने–बाने के लिए घातकरहीहैजिसकापरिणामभारतीय उपमहाद्वीप दशकों से झेलरहाहै।राहीइसकाविरोध करतेहैं।

''साहित्य सामाजिकआदर्शों का कास्रष्टाहै, राहीइसकास्पष्टविरोध करतेहैं।जबआदर्शहीभ्रष्टहोगयातोसमाज के पतनमेंबहुतदिननहींलगते। 21 प्रेमचंद का यह कथनसमाजमेंसाहित्य के महत्त्वकोस्पष्टकरताहै। एक सच्चासाहित्यकारसामाजिकसरोकारों के प्रतिहमेशाजागरूकरहताहै।मानवतावाद के विकास के लिए आवश्यक हैकिजोसंकीर्णतासमाजमें समय–समय परआजातीहैउसकापरिष्कारकरने के लिए साहित्यकारअपनी धारदार कलम रूपीपतवारचलातेरहेजिससेसमाज रूपीसरोवरमेंसंकीर्णता की काईसाफहोतीरहे। इस कसौटीपरराही का साहित्य खराउतराहै।तीनअलग–अलगकालखण्डों व पृष्ठभूमिपरलिखी ये रचनाएँ समाजकोप्रगतिशीलबनाए रखनेहेतुकट्टरसाम्प्रदायिकतापरजोरदारचोटकरतीहैं। यह राही के दर्द की स्वानुभूतिमेंडूबीहुई कलम का हीकमालहैजिसनेसमस्या की उन

गहराइयोंकोछुआहैजिन्हेंप्रायः उपेक्षापूर्वकछोड़ दियाजाताहै।अतः कहनाउचितहोगाकिराहीमासूमरजाहिन्दुस्तानियत के सच्चेसिपाहीहैं।

सन्दर्भ

1. राहीमासूमरजा : खुदाहाफिजकहने का मोड़, कुँवरपाल सिंह (सं.). वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली, 2019, पृ. 30
2. दिवाकर (अनु.) : साम्प्रदायिकसमस्या (मार्च 1931 के कानपुरदंगों की जाँच के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कराची अधिवेशन 1931) द्वारानियुक्तसमिति की रिपोर्ट), नेशनलबुक ट्रस्ट, इंडिया, नईदिल्ली, 2013, पृ. सोलह
3. कुँवरपाल सिंह (सं.) : राहीऔरउनकारचनासंसार, शिल्पायनप्रकाशन, नईदिल्ली 2004 व भूमिका
4. तसलीमानसरीन : लज्जा, मुनमुनसरकार (अनु.), वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली , 2011, पृ. 95
5. राहीमासूमरजा : ओस की बूंद, राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 2004, पृ. 21
6. वही, पृ. 19
7. वही, पृ. 68
8. वही, पृ. 112
9. मोहनदासकर्मचंदगाँधी : संपूर्णगाँधी वाङ्मय, प्रकाशनविभाग, सूचना एवंप्रसारणमंत्रालय, भारतसरकार, दिल्ली, 1967, पृ. 108
10. राहीमासूमरजा, ओस की बूंद, राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली 2004, पृ. 108
11. राहीमासूमरजा : कटराबीआरज़ू, राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 2011, पृ. 78
12. वही, पृ. 111
13. राहीमासूमरजा : असंतोष के दिन, राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 2004, पृ. 23
14. सुधीशपचौरी : दूरदर्शनदशाऔरदिशा, प्रकाशनविभाग, सूचना एवंप्रसारणमंत्रालय, भारतसरकार, दिल्ली, 1994, पृ. 161
15. राहीमासूमरजा : असंतोष के दिन, राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 2004, पृ. 26
16. दैनिकभास्कर, समाचारपत्र, अजमेर, 29/10/2020, पृ. 13 (उदयपुर पृष्ठ)
17. राहीमासूमरजा : असंतोष के दिन, राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 2004, पृ. 34–35

18. विपिनचन्द्रा : साम्प्रदायिकता एक प्रवेशिका, नेशनलबुक ट्रस्ट इंडिया, नईदिल्ली, 2013, पृ. 69

19. वही, पृ. 69

20. राहीमासूमरजा : ओस की बूंद, राजकमलप्रकाशन, नईदिल्ली, 2004, पृ. बयान–ए–तहरीरी

21. प्रेमचंद : कुछविचार, मलिक एंडकंपनी, 2020, पृ. 52